प्रातःक्लास 2/5/68 ओमशान्ति शिवबाबा याद है?

ओमशान्ति। मीठे–2 रूहानी बच्चे यह तो जानते हैं कि हम बाप के सामने बैठे हैं। वही बाप है फिर टीचर के रूप में पढ़ाने वाला भी है। वही बाप पतित–पावन सद्गति दाता भी है। साथ ले जाना(ने) वाला भी है। और रास्ता भी बहुत सहज बताते हैं। पतित से पावन बनाने लिए कोई मेहनत नहीं देते। कहां भी जाओ। घूमते–फिरते, विलायत में जाते अपन को आत्मा समझो। सो तो समझते ही हो; परन्तु फिर भी कहते हैं अपन को आत्मा निश्चय करो। देह– अभिमान को छोड़ कर आत्म–अभिमानी बनो। हम आत्मा हैं। शरीर लेते हैं पार्ट बजाने लिए। एक शरीर से पार्ट बजाकर फिर दूसरा लेते हैं पार्ट बजाने लिए। किसका पार्ट 100 वर्ष का है, किसका दो वर्ष है, किसका 6 मास का। कोई तो जन्म लेते ही ख़त्म हो जाते हैं। जन्म होने से पहले ही ख़त्म हो जाते। शरीर में प्रवेश किया उसका भी जन्म हो गया। कोई आत्मा ने प्रवेश किया। गर्भ होता है तो समझा जाता है कोई आत्मा आवेगी। अभी यहां के पुनर्जन्म और सतयुग के पुनर्जन्म में रात–दिन का फ़र्क है। यहां जन्म लेते हैं गर्भ में। इसको गर्भ जेल कहा जाता है। सतयुग में गर्भजेल नहीं होता। वहां विकर्म होते ही नहीं। रावण–राज्य ही नहीं। बाप सभी बातें समझाते हैं। साधु–संत आद तो कुछ भी नहीं जानते। न कोई शास्त्रों में हैं। मनुष्य तो भी यज्ञ, तप, दान, पुण्य आद करते हैं वह सभी है भक्ति मार्ग के। शास्त्र शुरू होते ही हैं द्वापर से। सतयुग, त्रेता में शास्त्र का नाम निशान भी नहीं। यह है ही भक्ति मार्ग के लिए। बाप ने समझाया है भक्ति मार्ग इतना बड़ा है जितना बीज का झाड़ बड़ा होता है। ज्ञान इतना बड़ा है जितना बीज है। भक्ति इतनी बड़ी है जितना झाड़। कितना फ़र्क है। यह बातें शास्त्रों में नहीं हैं। बेहद का बाप (बै)ठ इस शरीर द्वारा समझाते हैं। इस शरीर की आत्मा भी सुनती है। सुनाने वाला ज्ञान सागर बाप ही है जिसको अपना शरीर नहीं है। वह सदैव शिव ही कहलाते हैं। जैसे वह पुनर्जन्म रहित है वैसे नाम लेने से भी रहित है। उनको कहा ही जाता है सदा शिव। सदैव लिए ही शिव है। जिस्म का कोई नाम (न)हीं पड़ता। इसमें प्रवेश करते हैं तो भी इनके जिस्म का नाम उन पर नहीं आता। तुम्हारा है बेहद (का) सन्यास। वह हद के सन्यासी होते हैं उनके भी नाम फिरते रहते हैं। तुम्हारा नाम भी बाबा ने कितना (अच्छा) रखा है। ड्रामा अनुसार जिनको जो नाम दिये वह गायब हो गये। बाप ने समझा हमारे बने हैं तो कायम रहेंगे। फारकती, डायवोर्स नहीं देंगे; परन्तु दे दिये। तो फिर नाम रखने से फायदा ही क्या। सन्यासी.....आते हैं तो पुराना नाम ही चलता है। घर में लौटते तो हैं ना। ऐसे नहीं कि सन्यास करते (हैं) तो उन्हों को मित्र सम्बंधी आदि याद नहीं आते हैं। बहुत याद आते हैं। यहां भी नम्बरवार हैं। कोई (को) तो मित्र–सम्बंधी आद बिल्कुल ही याद नहीं रहते। कोई को तो सभी मित्र–सम्बंधी आद याद आते रहते हैं।....में फंस मरते हैं। रग जुटी रहती है। कोई तो झट कनेक्शन टूट जाता है। तोड़ना तो है ही। बाप ने (ब)ताया है कि अभी वापस जाना है। बाप बैठ सिखलाते हैं। सुबह को भी बाबा बता रहे थे ना देख–2 मन ..... होवत, नयन में बच्चे समाय रहत। क्यों सुख होता है; क्योंकि आँखों में नूर (बच्चे) समाये हुये हैं। आत्माएं....है ना। बेहद का बाप भी देख–देख खुश होते हैं। लौकिक बाप भी बच्चों को देख–देख खुश होते हैं ना। (कोई) तो बहुत अच्छे बच्चे होते हैं। कोई नाफरमानबरदार होते हैं तो बाप इतना खुश नहीं होता। ..... कहते हैं ऐसा बच्चा तो न जन्मता तो अच्छा था। नाहक पैदा हुआ। नाम बदनाम करते हैं। यह बाप सर्विसएबुल सपूत बच्चों को देख कर हर्षित होते हैं। कोई तो नाम बदनाम करते हैं। सेन्टर सम्भालते.....बनता फिर भी विकार में चले जाते हैं। बेहद का बाप कहते हैं यह तो कुल कलंकित निकला। ब्राह्मण का नाम बदनाम करते हैं बच्चों को समझाते रहते हैं किसके भी नाम–रूप में नहीं फंसना है। (उ)सको सेमी कुल कलंकित कहेंगे। सेमी से फिर फाइनल भी हो जाते हैं। खुद लिखते हैं बाबा हम गिर गये। (ह)मने काला मुँह कर दिया। माया ने धोखा दे दिया। माया के तूफान बहुत आते हैं। बाप कहते हैं काम कटारी

चलाई यह भी एक दो को दुःख दिया; इसलिए प्रतिज्ञा कराते हैं। खून निकाल कर भी उन से बड़ा पत्र लि(खाते) हैं। वह एग्रीमेन्ट रखी जाती है। आज वह है नहीं। बाप कहते हैं अहो माया। तुम बड़ी जबरदस्त हो। ऐ(से)–ऐसे बच्चे जो खून से भी लिख कर देते हैं तुम उनको भी खा लेती हो। जैसे बाप समर्थ है माया भी समर्थ है। आधा कल्प का ... समर्थी का वर्सा मिलता है, आधा कल्प फिर माया समर्थी गंवायें देती है। यह है... .....की बात। देवी–देवता धर्म वाले हा (ही) सॉलवेन्ट से इनसॉलवेन्ट बनते हैं। अभी तुम ल.ना. के मन्दिर में जावेंगे तो जिस भावना से पहले जाते थे उस भावना से अभी थोड़े ही जावेंगे। तुम तो वण्डर खावेंगे। इस घराणे के तो हम हैं। अभी हम पढ़ रहे हैं। इनकी आत्मा भी बाबा से पढ़ रही है। आगे तो जहां–तहां तुम माथा टेकते थे। अभी ज्ञान है हरेक के 84 जन्मों की बायोग्राफी को तुम जानते हो। हरेक अपना–2 पार्ट ब(जाते) हैं। बाप कहते हैं बच्चे सदैव ही हर्षित रहो। यहां के हर्षित पने के संस्कार फिर साथ ले जावेंगे। तुम जानते हो हम क्या बन रहे हैं। बेहद का बाप हमको यह वर्सा दे रहे हैं। और तो कोई दे भी न सके। एक भी मनुष्य नहीं जिसको यह पता हो कि यह ल.ना. कहां गये। समझते हैं जहां से आये वहां चले गये। अभी बाप कहते हैं बुद्धि से जज करो। भक्ति मार्ग में भी तुमने वेद, शास्त्र, ग्रंथ आद पढ़े हो। अभी मैं तुमको ज्ञा(न) सुनाता हूँ। तुम जज करो भक्ति राइट है या हम राइट्स है। बाप राम है राइट्स। रावण है अनराइट्स। रावण के कारण भारत आज अनराइट्स बना है। भारत के कारण सारी दुनियां ही अनराइट्यिस बना है। हर बात में असत्य बोलते हैं। ज्ञान की बातों के लिए कहा जाता। तुम समझते हो पहले हम भी असत्य बोलते थे। दान–पुण्य आद कुछ करते थे पापात्माओं का पापात्माओं से ही लेन–देन था। दान–पुण्य आद करते थे सीढ़ी.....ही उतरते आये। तुम देते भी आत्माओं को हो। पापात्मा पापात्मा को देते हैं फिर.....पुण्यात्मा कैसे बने.....वहां आत्माओं की लेन–देन होती ही नहीं। बाप तुमको इस समय इतना सभी कुछ देकर जाते हैं जो वह(ीं) लेन–देन घाटा कर्ज़ आद की बात ही नहीं। यहां तो लाखों रुपये का कर्ज़ा ले लेते हैं। इस रावण राज्य में मनु(ष्य को कदम–2 पर दुःख है। अभी तुम संगमयुग पर हो। तुम्हारी तो कदम–2 में पदम है। देवताएं पदमपति कैसे बने यह किसको भी पता नहीं है। स्वर्ग़ तो ज़रूर था ना। निशानियां हैं बाकी उसका ज्ञान नहीं है कि राज्य लिया। वहां भी यह पता नहीं रहता कि कौन सी कर्म किये हैं अगले जन्म में। वह तो है ही नई सृष्टि उसको कहा ही जाता है सुखधाम। 5000 वर्ष की बात है। तुम पढ़ते हो सुख के लिए। पावन बनने लिए अथाह युक्तियां निकालते हैं। कितना भी भल गंगा में स्नान करे, गुरू करे; परन्तु पावन कोई भी हो नहीं सकते। अभी बाप ने कितना समझदार बनाया है। कोई भी डिफीकल्ट नहीं। भक्ति मार्ग में तो धक्का खाते–2 कंगाल बन गये हैं। उतरती कला है ना। बाबा कितनी अच्छी रीत समझाते हैं तीन है रहने के स्थान। शान्तिधाम वह है आत्माओं का स्वीट होम। जैसे विलायत से आते हैं तो समझेंगे हम स्वीट होम जाते हैं। तुम्हारा स्वीट होम है शान्तिधाम। बाप भी शान्ति का सागर है ना। जिसका पार्ट ही पिछाड़ी में होगा तो कि(तना) समय शान्तिधाम में रहते होंगे। बहुत ही हल्का पार्ट कहेंगे। इस ड्रामा में तुम्हारा है हीरो–हीरोइन का पार्ट तुम विश्व के मालिक बनते हो। यह नशा कब और कोई में हो न सके। और कोई के तकदीर में स्वर्ग़ के (सुख) है नहीं। यह तुम बच्चों को ही मिलती है। जिन बच्चों को बाप देखते हैं। कहते हैं बाबा तुम्ही से बोलूँ, तुम्ही से बात करूँ। बाप भी कहते हैं तुम बच्चों को देखकर बड़ा हर्षित होता हूँ। हम 5000 वर्ष बाद आये हैं। बच्चों को दुःखधाम से सुखधाम ले जाते हैं; क्योंकि काम चिक्षा पर चढ़ कर जल क(र) भस्म हो गये हैं। अभी जाकर उनको कब्र से निकालना है। आत्माएं तो सभी हाज़िर है ना। उन(को) पावन बनाना है। भक्ति मार्ग के गुरू आद लोग से भी बाप ने छुड़ा दिया है। कहते हैं बुद्धि से उन सभी (को) निकाल दो। अभी तो एक सद्गुरू मिला है ना। तो आटोमेटिकली और सभी भूल जाते हैं। एक से ही ताल्लुक

है। तुम्हारा कहना भी यह था आप जब आवेंगे तो हम आप के सिवाय और किसी को याद नहीं करेंगे। आपके ही मत पर चलेंगे। आपके ही श्रीमत से हम बहुत श्रेष्ठ बनेंगे। गाते भी हैं ऊँच ते ऊँच भगवान। उनकी मत भी ऊँच ते ऊँच है। बाप खुद कहते हैं यह ज्ञान अभी तुमको देता हूँ वह फिर प्रायः लोप हो जावेगा। भक्ति मार्ग के शास्त्र तो परम्परा चले आते हैं। कहते हैं रावण भी चला आता है। तुम पूछो रावण को कब से जलाते आये हो। क्यों जलाते हो। कुछ भी पता नहीं। अर्थ न समझने कारण कितना शादमाना करते हैं बहुत बीजिटर्स आद को मंगाते हैं। जैसे शिरोमणी करते हैं रावण को जलाने की। तुम बच्चे जानते तो क्या–2 करते हैं। वास्तव में है यह बेहद का खेल। इसमें फिर हद का बना देते हैं। समझ नहीं सकते हैं रावण को कबसे जलाते आते हैं। दिन–प्रतिदिन बुत बड़ा बनाते जाते हैं। कहते हैं यह परम्परा से चला आता है; परन्तु ऐसे तो हो नहीं सकता। आखिरीन ... रावण को कब तक जलाते रहेंगे। तुम तो जानते हो बाकी थोड़ा समय है। फिर तो इनका राज्य ही नहीं होगा। बाप कहते हैं यह रावण सबसे पुराना दुश्मन है। उन पर विजय पानी है। मनुष्यों की बुद्धि में तो क्या–2 बातें हैं। वह भी ड्रामा में नूँध है। सेकण्ड व सेकण्ड जो (नि)कलता आया है 4900 वर्ष हो गये हैं पार्ट में चलते–2 तुम तिथि, तारीख (सारा) हिसाब निकाल सकते हो। कितना घंटा, कितने वर्ष, कितने मास हमारा पार्ट चलता है। यह सारा ज्ञान बुद्धि में होना चाहिए। बाबा हमको यह समझाते हैं बाप कहते हैं मैं पतित–पावन हूँ। तुम मुझे बुलाते ही हो आकर पावन बनाओ। पावन दुनियां होती है शान्तिधाम और सुखधाम में। अभी तो सभी पतित हैं। हमेशा बाबा–बाबा करते रहो। यह भूलना न है। तो सदैव शिवबाबा याद आवेगा। यह हमारा बाबा है। पहले–2 है यह। बेहद का बाबा है ना। बाबा कहने से ही वर्से की खुशी में आते हैं। सिर्फ़ भगवान वा ईश्वर प्रभु कहने से ....(वि)चार नहीं आवेगा। सभी को भूलो। बेहद का बाप समझाते हैं ब्रह्मा द्वारा। यह उनका रथ है। उन द्वारा कहते हैं मैं तुमको यह बनाता हूँ। इस बेज में सारा ज्ञान भरा हुआ है। पिछाड़ी में तुमको ही याद रहेगा । शान्तिधाम–सुखधाम। दुःखधाम को तो भूलते जाते हो। यह भी जानते हो फिर नम्बरवार सभी अपने टाइम पर आवेंगे। इस्लामी, बौद्धी, क्रिश्चियन आदि कितने ढेर हैं। अनेक भाषाएं हैं। पहले था एक धर्म। फिर उनमें कितने निकले हैं। कितनी लड़ाईयां आद लगी हैं। लड़ते तो सभी हैं; क्योंकि निर्धण के बन जाते हैं ना। अभी बाप कहते हैं मैं तुमको जो राज्य देता हूँ वह कब कोई तुमसे छीन न सके। बाप स्वर्ग़ का वर्सा देते हैं। जो कोई छीन न सके। इसमें अखण्ड–अटल–अडोल रहना है। माया में तूफान तो ज़रूर आवेंगे। नम्बरवन को भी तूफान आते हैं। पहले जो आगे होगा वह सब अनुभव करेगा ना। बाबा कहते हैं मैं सभी से पहले अनुभव करता हूँ। बीमारियां सब हमेशा के लिए ख़त्म होनी है; इसलिए कर्मों का हिसाब–किताब बीमारी आद जास्ती आये तो उसमें डरना न है। यह पिछड़ी के हैं फिर होंगे नहीं। अभी सभी उथल खावेंगे। बूढ़ों को भी माया जवान बना देती हैं। मनुष्य वानप्रस्थ लेते हैं तो वहां फीमेल्स नहीं होती है। सन्यासी भी जंगल में चले जाते हैं। वहां भी फीमेल्स नहीं होती है। कोई तरफ देखते भी नहीं हैं। भिक्षा ली और चले। आगे तो बिल्कुल स्त्री तरफ देखते ही नहीं थे। समझते थे देखने से ज़रूर बुद्धि जावेगा। बहन–भाई के सम्बन्ध में भी बाबा देखते हैं बुद्धि जाती है; इसलिए बाबा कहते हैं भाई–2 देखो। शरीर का नाम भी नहीं। यह बड़ी ऊँची मंज़िल है। एकदम चोटी पर जाना है।ि यह राजधानी स्थापन होती है। इसमें बड़ी मेहनत करनी पड़ती है। कहते हैं हम तो ल.ना. बनेंगे। बाप कहते हैं बनो। श्रीमत पर चलो। माया के तूफान तो आवेंगे। कर्म इन्द्रियों से कुछ न करना है। दिवाला आद तो ऐसे भी मारते रहते हैं। ऐसे नहीं कि ज्ञान में आये हैं तब दिवाला मारते हैं। यह तो चला आता है। बाप तो कहते हैं मैं आया ही हूँ तुमको पतित से पावन बनाने। दिवाला तो तुम्हारा यहां भी निकलता हैं। कब बहुत अच्छी भी सर्विस करन्ती, और को समझावन्ती, फिर दिवाला मारन्ती।

माया बड़ी जबरदस्त हैं। मैं क्या कर सकता है। बहुत अच्छे–2 बच्चे भी गिर पड़ते हैं। ढेर हैं। यह बाप है। जो मुझे प्यार करते हैं मैं भी उनको प्यार करता हूँ। मेरे सर्विस करने वाले मुझे बहुत याद आते ..... को बैठता हूँ तो सिर्फ़ तुमको नहीं देखता हूँ। जो अच्छे मेहनत करते हैं वह भी मुझे याद पड़ते हैं।....करते हैं बहुतों को सुखदाई बनाते हैं नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार उनको भी याद करता हूँ। जानता हूँ इनको सर्विस नहीं करती है। तो क्या पद पावेंगे। यह राजधानी स्थापन हो रही है ना। बाप हर एक वर्ष को जानते हैं। इन सभी बच्चों को किसने लाया। तुम पण्डों ने लाया है ना। तुम ही सर्विस करते हो,.....कहां तक बैठ हम माथा मारेंगे। बाप कहते हैं तुम मेरे से भी बहुत अच्छी सर्विस करते हो। तो तुम(हें वह) नमस्ते करते हैं। बाबा तो एक ही जगह पर बैठे हैं। तुमको चारों तरफ जाना पड़ता है। बाबा से तुम....सर्विस करते हो। तो तुमको नमस्ते करते हैं। फल भी तुमको मिलता है। यह सारा ड्रामा बना हुआ है।..... बच्चों को समझाते रहते हैं। वहां से ही याद करते आये हैं। हम जाते हैं बच्चों के झुण्ड में। पुरानी.....पतित शरीर में। वह तो समझते हैं बैल पर सवारी थी। तुम एरोप्लेन , मोटरों में सवारी करते हो और इन बिचारे को बैल पर सवारी। पत्थर ठिक्कर में मिला देते हो। कैसा खेल बना हुआ है। यह बाबा ही समझाते हैं। और लायक बनाते हैं। तुमको दो बाप, दो इंजन मिलती है श्रृंगारने लिए। तुम ज़ेवर आद उतार देते हो। एक राजा का मिसाल है। खिरवत की बच्ची अच्छी देखी। बोला इनको रानी बनाता हूँ; परन्तु ..... उनमें अक़्ल तो था नहीं। वह बोली मुझे तो अपने घर जाना है।..... हिस्ट्री सुनाना) ऐसी कथाएं भक्ति (मार्ग) में बहुत ही सुनाते हैं। यहां भी कितने आते हैं। मैं उनको विश्व की महारानी बनाता हूँ फिर भी मुझे छोड़ कर जाते हैं। फिर जब दु:खी होते हैं तो आ जाते हैं। समझते हैं ना। नाहक हमने शादी की। फिर कोई–2 निकल पड़ते हैं। बच्चे भी जानते हैं 5000 वर्ष पहले भी हम ऐसे ही बाप से पढ़े थे। पढ़ाने वाला (टीचर) फिर आये हैं। हमको पढ़ा रहे हैं। पवित्र बनने की युक्ति बता रहे हैं। जिसके लिए आधा कल्प तुमने (भक्ति) की है। भगवानुवाच है एक भी मोक्ष को नहीं पाते हैं। यह बना बनाया ड्रामा है। गाते भी हो बनी बना(ई) ..... अभी की बात है। चिंता ताकी कीजिए जो अनहोनी होय। नई कोई बात तो होती नहीं। फिर (चिन्ता) क्यों? अम्मा मरे तो भी हलवा खाना,..... सभी चिंताएं दूर हो जाती हैं। रचयिता बाप द्वारा ही रचना (के) आदि, मध्य, अंत को जानना है। बाप ही आकर रचयिता और रचना के आदि, मध्य, का राज़ समझाये ..... बनाते हैं। शान्ति भी मिल जाती है। कोई तो एक जन्म पार्ट बजा कर फिर चले जाते हैं तो कितना समय शान्ति में रहा। जैसे मच्छड़ों मिसल आया और गया। याद भी नहीं रहेगी। याद तो फिर बड़े–2 एक्ट(र्स) रहेंगे। यह है ज्ञान। सुबह को याद की यात्रा। उनसे हेल्थ इनसे वेल्थ। उनको अमरलोक कहा जाता है। वहां मरना अक्षर होता ही नहीं। शरीर बूढ़ा हुआ तो दिल होती है अभी शरीर छोड़ कर दूसरा लेवें। (सर्प) का मिसाल।) यह दृष्टांत भी अभी की है। जो फिर भक्ति मार्ग में बतलाते रहते हैं। होता कुछ भी नहीं है। दो–चार सबजेक्ट्स हैं मुख्य। एक तो अपन को आत्मा समझ बाप को याद करना है। और (गृहस्थ) व्यवहार में रहते हुये भाई–2 समझना। तुम जानते हो बाप आया हुआ है हम भाईयों को पढ़ाने। संस्कार ..... में रहती है ना। तुम जानते हो 84 जन्मों का पार्ट अभी हमारा पूरा हुआ। फिर शुरू होगा सतयुग में सुख का पार्ट। पुरानी दुनियां का पार्ट पूरा हुआ। अच्छा मीठे–2 सिकीलधे बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्(यार) गुडमॉर्निंग और नमस्ते।

आगरा में तीसरा एक नया सेन्टर खुला है जिसकी एड्रेस भेज रहे हैं।

BRAHMA KUMRIS
XLLXX 207/2. NORTH VIJAY NAGAR, RING ROAD, AGRA. 3